# उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद
# U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005
**Near Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005**



पत्रांकः 209/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉकः 15–05–2025


**दिनांक : 15 मई, 2025** **समय : 12:00 बजे**
**स्थान : उपकार सभाकक्ष** **उपस्थितिः संलग्न**

## मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2025–26 की चतुर्थ बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2025–26 की चतुर्थ बैठक, डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 15 मई, 2025 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक, पादप प्रजनक एवं पादप रोग वैज्ञानिक; आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के धान प्रजनक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ; कृषि विभाग; वन विभाग; उद्यान विभाग; लखनऊ, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र), लखनऊ तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में विचार–विमर्श उपरांत मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये गयेः–

- आगामी दो–तीन दिन प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु क्षेत्रों में ऊष्ण लहर (लू) की सम्भावना है जिससे बचाव हेतु फसलों में उचित नमी बनाये रखें तथा पशुओं को छायादार स्थान पर रखें। कृषि कार्यों के लिए सुबह अथवा सायंकाल ही बाहर निकलें।
- जो खेत खाली हैं उन खेतों की मिट्टी पलट हल से गहरी जुताई करें जिससे मृदा में दबे/छिपे खरपतवार के बीज व कीट गर्मी से नष्ट हो जाय।
- मृदा जनित रोगों यथा तना सड़न, जड़ सड़न, झुलसा, भूरा धब्बा, बकानी, जीवाणु झुलसा, उकठा आदि से बचाव हेतु ट्राइकोडर्मा विरिडी 1 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. अथवा ट्राइकोडर्मा हरजियेनम 2 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. की 2.5 किग्रा. प्रति हे. मात्रा 65–75 किग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छीटा देकर 8–10 दिन तक छाया में रखने के उपरान्त बुवाई के पूर्व आखिरी जुताई पर भूमि में मिला देने से शीथ ब्लाईट, मिथ्या कण्डुआ आदि रोगों से बचाव किया जा सकता है।
- धान की रोपाई किये जाने वाले प्रक्षेत्रों में हरी खाद हेतु 80–90 किग्रा. सनई अथवा 60 किग्रा. ढैंचा प्रति हे. की दर से बुवाई सुनिश्चित करें।
- यदि ढेंचा पहले बोया गया हो और वह 45 दिन का हो गया हो खेत में पलट दें।
- अधिक अवधि की (145 दिन से ज्यादा) प्रजातियों की नर्सरी पहले तथा मध्यम (130 से 140 दिन) व कम अवधि (115 से 120 दिन) की नर्सरी क्रमशः बाद में डालें। नर्सरी हेतु शोधित बीज का ही प्रयोग करें।
- जायद फसलों, सब्जियों एवं फलदार यथा आम व लीची के बागों में वृक्षों में आवश्यकतानुसार नमी बनाये रखें।
- आम के भुनगा कीट की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. (3.0 मिली0/10 लीटर) एवं प्रोफेनोफास 50 प्रतिशत ई.सी. (1 मिली0/लीटर) पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

### आगामी सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (16–22 मई, 2025)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह के उत्तरार्ध में प्रदेश के पश्चिमी–मैदानी, भाभर तराई, पूर्वी–मैदानी एवं मध्य–पश्चिमी मैदानी कृषि जलवायु अंचलों में तड़ित झंझावात के साथ कहीं–कहीं हल्की वर्षा होने की संभावना है। प्रथम सप्ताह के आरंभिक चरण में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश में कहीं–कहीं उष्ण लहर/लू चलने की संभावना है।

सप्ताह के आरंभिक चरण में प्रदेश के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से अधिक जबकि सप्ताह के अंतिम चरण में यह सामान्य के आसपास रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 38 से 40 डिग्री से.; विन्ध्य, पूर्वी–मैदानी, पश्चिमी–मैदानी, उत्तर–पूर्वी मैदानी एवं मध्य–पश्चिमी मैदानी के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 40 से 42 डिग्री से.; दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी तथा उत्तर–पूर्वी मैदानी,

मध्य मैदानी एवं बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 42 से 44 डिग्री से. रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई, पश्चिमी–मैदानी एवं मध्य–पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य के आसपास जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से अधिक रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री से.; पश्चिमी–मैदानी, मध्य–पश्चिमी मैदानी, उत्तर–पूर्वी मैदानी एवं पूर्वी–मैदानी क्षेत्र के पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 24 से 26 डिग्री से. तथा अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 26 से 28 डिग्री से. रहने की संभावना है।

## आगामी द्वितीय सप्ताह के मौसम का दृष्टिकोण (23–29 मई, 2025)

इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र उत्तरी–पूर्वी मैदानी, पूर्वी–मैदानी विन्ध्य एवं मध्य–मैदानी कृषि जलवायु अंचलों में कहीं–कहीं वर्षा होने की संभावना है।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से अधिक जबकि प्रदेश के शेष भाग में यह सामान्य के आस पास रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र एवं उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 37 से 39 डिग्री से. तथा पूर्वी–मैदानी, विन्ध्य क्षेत्र, मध्य–पश्चिमी मैदानी के अधिकांश भाग एवं पश्चिमी–मैदानी के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 39 से 41 डिग्री से.; पश्चिमी–मैदानी के दक्षिणी भाग एवं मध्य–मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 41 से 43 डिग्री से.; दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र एवं संलग्न बुंदेलखंड के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 43 से 45 डिग्री से. रहने की संभावना है।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से अधिक जबकि प्रदेश के शेष भाग में यह सामान्य के आसपास रहने की संभावना है। प्रदेश के मध्य–पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग एवं भाभर तराई, उत्तर–पूर्वी मैदानी, पूर्वी–मैदानी, विन्ध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 24 से 26 डिग्री से. दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 28 से 30 डिग्री से. जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 26 से 28 डिग्री से. रहने की संभावना है।

### धान की खेती

- धान के बेहन के खेतो की गर्मी की जुताई करें।
- साण्डा धान की बेहन डालने का उपयुक्त समय है। मिट्टी की जॉच परिणाम के आधार पर संस्तुत उर्वरकों का प्रयोग बुवाई से पूर्व करें।
- धान की सीधी बुआई वाले खेतों की तैयारी करें।
- धान के बीज की व्यवस्था प्रक्षेत्र के अनुरूप जैसे उपरहार, सिंचित, सुगन्धित एवं निचली भूमि के अनुसार कर लें।
- धान के बेहन के लिये 30 किग्रा0 बीज प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- उपरहार भूमि के लिए एन.डी.आर.–97, एन.डी.आर.–118, एम.टी.यू.–1010, शुष्क सम्राट, सहभागी धान के बीज को बेहन में प्रयोग करें।
- सिंचित भूमि के लिए एन.डी.आर.–2064, एन.डी.आर.–2065, एन.डी.आर.–359, एन.डी.आर.3112–1, सरजू–52, एच.यू.आर.–1304 एवं एच.यू.आर.–1309 धान के बीज को प्रयोग करें।
- निचली भूमि के लिए एन.डी.आर.–9930111, एन.डी.जी.आर.–201,एन.डी.जी.आर.–702, स्वर्णा–सब–1, धान के बीज को प्रयोग करें।
- सुगन्धित के लिए पूसा नरेन्द्र कालानमक–1, पूसा सी.आर.डी.कालानमक–2, एन.डी. आर.–6093, एवं नरेन्द्र लालमती धान के बीज को प्रयोग करें।
- अचानक बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों के लिए आई.आर. 64–सब 1 (पकने की अवधि 110 दिन) एवं सॉभा महसूरी–सब 1 (पकने की अवधि 145 दिन) धान के बीज को प्रयोग करें।

### जायद फसलों की खेती

- उर्द/मूँग में आवश्यकतानुसार सायंकाल में ही सिंचाई करें।

- उर्द/मूंग की फसल में पीला चित्रवर्ण (मोजैक) रोग दिखाई देते ही प्रभावित पौधे सावधानीपूर्वक उखाड़ कर नष्ट (जला दे/गाड़ दें) कर दें। 5 से 10 पौढ़ मक्खी (सफेद मक्खी) प्रति पौध की दर से दिखाई पड़ने पर आक्सीडेमेटॉन–मिथाइल 25 प्रतिशत ई.सी. अथवा इमिडाक्लोप्रिड 0.5 ग्रा. प्रति ली. या डाइमेथोयेट 30 ई.सी. 1 लीटर प्रति हे. की दर से 600–800 ली. पानी मिलाकर छिड़काव करें।

**मक्का की खेती**

- जायद मक्का की खड़ी फसल में हल्की सिंचाई कर नमी बनाये रखें। तना छेदक का प्रकोप दिखाई देने पर इसकी रोकथाम हेतु ईमामैक्टिन बेंजोएट एस.जी. 200 ग्राम प्रति एकड़ की दर से 250–300 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रयोग करें।
- देर से पकने वाली मक्का की बुवाई मध्य मई से मध्य जून तक पलेवा करके करें। देर से पकने वाली (95 दिन से अधिक) किस्मों यथा; एच.क्यू.पी.एम.–4, एच.एम.एच.–3904, पी.एम.एच.–3, एच.क्यू.पी.एम.स.–5, एन. के.–61, एच.क्यू.पी.एम.–1, सीड टेक–2324 तथा बुलंद आदि की बुवाई करें।
- यदि बीज शोधित न हो तो बोने से पूर्व 1 किग्रा0 बीज को 4–6 ग्रा0 ट्राइकोडर्मा प्रति किग्रा0 बीज अथवा 2.5 ग्रा. थीरम या 2 ग्राम कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से शोधित करें।

**गन्ना की खेती**

- वर्तमान में गन्ने में पाइरीला कीट का प्रकोप देखा जा रहा है, इसके नियंत्रण हेतु यदि खेत में परजीवी प्राकृतिक रूप से दिख रहे हैं तो खेत में नमी बनाये रखें तथा किसी भी कीटनाशक का छिड़काव न करें। यदि परजीवी दिखाई नहीं दे रहे है तो इमिडाक्लोप्रिड कीटनाशी का 0.3 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- गन्ने में काला चिटका के प्रकोप की दशा में प्रोफेनोफॉस 10 प्रतिशत + साइपरमेन्थ्रीन 4 प्रतिशत का 750 मिली0 अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत के 200 मिली0 650 ली0 पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- शरदकालीन गन्ने में पर्याप्त कल्ले होने पर अवांछित कल्लों को निकलने से रोकने के लिये मिट्टी चढ़ा दें।
- पेड़ी फसल में अधिक पैदावार लेने हेतु सिंचाई, उर्वरक प्रबंधन एवं निराई गुड़ाई समय समय पर करें।
- बसंतकालीन गन्ने में सिंचाई पश्चात् 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति एकड़ की दर से टापड्रेसिंग कर गुड़ाई करें।
- चोटीबेधक कीट के नियंत्रण हेतु ग्रसित नवजात पौधे को जमीन की सतह से काटकर नष्ट कर दें अत्यधिक प्रकोप की दशा में क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल 18.5 एस.सी. के 150 मि.ली. कीटनाशक को 400 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ की दर से ड्रेचिंग कर सिंचाई करें।
- जिन किसान भाइयों ने गन्ने के साथ अन्तः फसल के रूप में दलहनी फसलों यथा मूंग, उर्द एवं लोबिया की बुआई की है। समय–समय पर सिंचाई, खरपतवार प्रबन्धन एवं कीट प्रबन्धन करते रहें।

**सब्जियों की खेती**

- कद्दूवर्गीय फसलों में यदि हरा फुदका कीट 10 की संख्या में प्रति हिल दिखाई दे तो फल तुड़ाई उपरान्त फसल पर इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 मिली. जबकि तना व फल छेदक कीट के नियंत्रण के लिए फ्लुबेन्डीमाइड 39.35 प्रतिशत एस.सी. की 1.0 मिली. को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- कद्दूवर्गीय फसलों को फल मक्खी से बचाने हेतु मेथाइल यूजीनॉल क्यूल्योर फेरोमोन ट्रैप 8–10 ट्रैप प्रति हे0 की दर से लगायें।
- मिर्च में पर्णकुंचन एवं मोजैक विषाणु की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 मिली. को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 10–12 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें तथा रोग ग्रसित पौधों को उखाड़कर जला दें अथवा मिट्टी में दबा दें।
- भिण्डी में पीत शिरा मोजैक कीट की रोकथाम के लिए प्रभावित पौधे उखाड़कर जला दें या मिट्टी में दबा दें तथा नीला चिपचिपा ट्रैप 8 से 10 ट्रैप प्रति हे0 लगायें। इसके रासायनिक उपचार में इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 मिली0 दवा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

- भिण्डी की शाखा एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रैप 5 प्रति हेक्टर फसल में 6 से 12 इंच ऊपर लगायें अथवा फ्लुबेन्डीमाइड 39.35 प्रतिशत एस.सी. की 2.0 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव करें।

**बागवानी**

- फलों के बाग के रोपण हेतु मई माह में गड्ढों की खुदाई पूर्ण कर लें। आम एवं लीची के बाग की स्थापना के लिए 10x10 मी0 की दूरी पर एक घन मीटर, अमरूद, ऑवला, नींबूवर्गीय, बेल एवं बेर के रोपण हेतु 6x6 मी0 की दूरी पर 75–100 घन सेमी0 एवं केला एवं पपीता की खेती के लिए 1.8x1.8 मी0 की दूरी पर 35 घन सेमी0 आकार के गड्ढे की खुदाई कर के खुला छोड़ दें, जिससे धूप से कीट एवं रोग कारक समाप्त हो जाएं। गड्ढों की खुदाई करते समय यह ध्यान रखें कि गड्ढे के ऊपर की आधी गहराई की मिट्टी एक तरफ एवं शेष मिट्टी दूसरी तरफ रखें।
- फलों के नये बाग लगाने के लिये उपयुक्त खेत का चयन एवं रेखांकन कर गड्ढों की खुदाई कर गड्ढे में खाद–उर्वरक की उपयुक्त मात्रा तथा नीम की खली व मिट्टी की समान मात्रा मिलाकर जमीन से लगभग 1 फीट ऊँचा भराई करें।
- आम एवं लीची के बागों में हल्की नमी बनाये रखें।
- वर्तमान मौसम में आम के फलों को आंतरिक ऊतक क्षय (फ्रूट निक्रोसिस) से रोकथाम हेतु बोरेक्स 6 से 8 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी के घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव करें।
- आम एवं अमरूद में फलमक्खी से बचाव हेतु मिथाइल यूजिनाल युक्त क्यूल्योर ट्रैप 8–10 ट्रैप प्रति हे0 लगाये तथा नीम एक्सट्रैक्ट 50 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- आम के दशहरी, लंगड़ा, चौसा, मल्लिका तथा आम्रपाली किस्मों में आम की बैगिंग तकनीकी सर्वोत्तम है। फलमक्खी कीट (डांसी मक्खी) तथा काली फफूंद (सूटी मोल्ड) रोग से होने वाले कुप्रभाव से बचाने हेतु एवं साफ–सुथरा तथा आकर्षक फल प्राप्त करने हेतु फ्रूट कवर बैग का अवश्य प्रयोग करें। जब फल 50–100 ग्रा0 का हो जाए तो फल को कवर करें। आम के रंगीन प्रजातियों में फ्रूट कवर बैग का प्रयोग न करें क्योंकि कवर करने पर फलों पर रंग विकसित नहीं होगा।
- केले की फलों/डंठलों पर काले भूरे धब्बे दिखाई देने पर कापर आक्सीक्लोराइड 0.3 प्रतिशत के घोल का छिड़काव करें।
- लीची में फल बेधक कीट की रोकथाम के लिए इन्डाक्साकार्ब 14.5 एस.सी. की 1.0 मिली0 अथवा फ्लुबेनडीमाइड 39.35 प्रतिशत एस.सी. की 2.0 मिली0 मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- नींबू में सफेद मक्खी व साईला के नियंत्रण हेतु डाईमिथोएट 30 ई.सी. 1.6 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- नींबू की टहनियां यदि सूख रही हो तो 50 ग्रा. जिंक सल्फेट मोनोहाइड्रेट घोल बनाकर 10 दिनों के अंतराल पर 2 से 3 पर्णीय छिड़काव करें।
- नींबू एवं आंवला के बागों में फूल खिलने का समय है अतः सिंचाई न करें।
- बेर की शाखाओं की गहन कटाई–छंटाई मई माह में पूर्ण कर लें।

**पशुपालन**

- पशुओं को मुरझाया हुआ हरा चारा (विशेष रूप से ज्वार) ना खिलायें क्योंकि इसमें एच.सी.एन. तत्व (जहरीला तत्व) की अधिकता से पशु बीमार हो सकते हैं।
- वर्तमान मौसम में तापमान अधिक होने के कारण पशुओं में डिहाइड्रेशन की समस्या हो सकती हैं। इससे बचाव हेतु पशुओं को खनिज–लवण मिक्चर खिलायें।
- मुर्गियों को गर्मी से बचाने हेतु बाड़े की छत पर पुआल रख कर उस पर पानी छिड़क दें।
- पशुओं को हरे चारे जैसे ज्वार, बाजरा व चरी पर्याप्त नमी वाले खेतों की ही खिलायें। हरे चारे हेतु चारे की कटाई जड़ से 6 इंच ऊपर ही करें।

- राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत पशुओं में एफ.एम.डी. एवं बी.क्यू. बीमारी का टीकाकरण कराया जा रहा है। यह सुविधा पशुचिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- पशुओं को केवल हरा चारा न खिलायें उनको 60:40 के अनुपात में सूखा एवं हरा चारा मिलाकर खिलायें।
- बदलते मौसम में पशुओं को अंतः कृमिनाशक एवं बाह्य परजीवीनाशक पशुचिकित्सक की सलाह तथा गोबर की जांच उपरांत आवश्यकता पड़ने पर उपयोग करें।
- राष्ट्रीय पशुधन बीमा योजना के अन्तर्गत पशुपालकों को अपने पशुओं का बीमा बीमा कंपनी द्वारा निर्धारित दर से 85 प्रतिशत छूट पर किया जा सकता है जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी से सम्पर्क कर उठा सकते है।

**मत्स्य पालन**

- तालाब का चुनाव करने का उचित समय है अतः मत्स्य पालक उपयुक्त तालाब का चुनाव करें। मत्स्य पालन हेतु 0.2 हे. से 5 हे. तक के ऐसे तालाबों का चयन किया जाय जिसमें वर्ष भर अथवा 8–9 माह पानी भरा रहें। तालाबों के लिए जल की आपूर्ति का साधन होना चाहिए जिससे तालाबों में वर्ष भर एक से दो मीटर पानी सुनिश्चित किया जा सके।
- नये तालाब के निर्माण के लिए मत्स्य विभाग व ग्राम विकास विभाग के अधिकारियों से परामर्श करें जिससे कि सरकार द्वारा दिये जाने वाली आर्थिक सहायता की जानकारी प्राप्त की जा सके। नये तालाबों का निर्माण कार्य व पुराने तालाबों के सुधार का कार्य जून तक अवश्य पूर्ण कर लें।
- उर्वरा शक्ति की वृद्धि हेतु 250 किग्रा. प्रति हे. चूना तथा सामान्यतः 10–20 कु./हे./माह गोबर की खाद प्रयोग करें।
- कुछ जलीय वनस्पतियॉ मत्स्य पालन हेतु समस्यायें उत्पन्न करती है। नरई/नरकुल की रोकथाम के लिये तालाब की गहराई 4 से 5 फुट तक कर दें। जलस्तर 4 से 5 फुट होने पर नरई का बीज तालाब में नहीं जमेगा। जो तालाब जलकुम्भी ग्रस्त है और तालाब गर्मी में सूख जाते है उन्हें ट्रैक्टर से जुताई करा दें। जलकुम्भी सड़कर खाद बन जायेगी।
- जिन तालाबों में विगत 7–8 वर्षों से लगातार मत्स्य पालन किया जा रहा है और जिन तालाबों में गत वर्ष मत्स्य रोग देखा गया था उन्हें गर्मी के मौसम में सुखा दें तथा दो कु. प्रति हे. की दर से चूने का बुरकाव करें तथा मिट्टी को पलटकर उसको सूखने दें।
- जिन मत्स्य पालकों के तालाबों में अवांछनीय मत्स्य प्रजातियॉ पाई जा रही है उनमें बार–बार जाल चलाकर मछलियों को निकाल लें एवं तालाब को गर्मी में सुखाने के पश्चात आगामी मौसम में मत्स्य पालन करें।
- जो भी मत्स्य पालक मत्स्य बीज उत्पादन की प्रक्रिया से जुड़े हैं वह अपनी नर्सरियों की तैयारी कर लें।

**वानिकी**

- कंजी, सेमल, गुलमोहर इत्यादि के बीज प्राप्त करने हेतु निकटतम वनाधिकारी से सम्पर्क करें। पौधशाला में पौधों की सिंचाई आवश्यकतानुसार करें।
- मिट्टी ऊसरीली होने पर जिप्सम प्राप्त करने हेतु स्थानीय वनाधिकारी अथवा कृषि अधिकारी से सम्पर्क करें तथा खेत की मिट्टी का परीक्षण करायें।
- नर्सरी में संरक्षित वानिकी पौध को तेज धूप से बचाव हेतु छाया में रखें।
- पौधों के रोपण हेतु गड्ढ़ों की खुदाई पूर्ण करें जिससे मिट्टी में उपस्थित हानिकारक कीट नष्ट हो जाएं।

**राज्य आपदा प्रबंधन**

- राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ से प्राप्त सूचना के आधार पर वज्रपात की स्थिति में सभी विद्युत उपकरणों को बंद रखें, यात्रा कर रहे हों तो सुरक्षित स्थान देखकर रूक जाएं। टिन छतों, होर्डिंग, क्षतिग्रस्त मकान, मोबाइल टावर एवं बिजली के खम्भों से दूर रहें, धातु से बनी वस्तुओं का प्रयोग न करें, पेड़ के नीचे शरण न लें, घर के बाहर जाने की अधिकारिक सूचना न मिलने तक बाहर न निकलें।
- आगामी सप्ताह में तापक्रम अधिक होने की संभावना है अतः किसान भाई अपने साथ पानी लेकर चलें ताकि डिहाइड्रेशन से बचाव कर सकें।

**क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 29 मई, 2025 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।**

**नोटः–**

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट upcar.up.gov.in पर भी उपलब्ध हैं। क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट www.kisanmitraup.ai पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हों तो परिषद के ईमेल upcar12@gmail.com पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

**(संजीव कुमार)**
उपमहानिदेशक

***<u>प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।</u>***

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।

25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक।
43. कृषि विभाग के सभी उप कृषि निदेशक।
44. समस्त जिला कृषि अधिकारी।
45. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
46. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
47. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
48. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
49. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
50. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

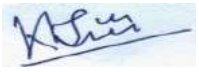

**(विनोद कुमार तिवारी)**
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

## मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2025–26 की चतुर्थ बैठक दिनांक 15 मई, 2025 की उपस्थिति

1. डा. संजीव कुमार, उप महानिदेशक, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
2. डा. विनोद कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
3. डा. जयपाल, वैज्ञानिक अधिकारी, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
4. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
5. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।
6. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ (ऑनलाइन)।
7. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या (ऑनलाइन)।
8. डा. समीर कुमार विश्वास, प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
9. श्री अजय कुमार, तकनीकी अधिकारी, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
10. श्री अशोक कुमार, सहायक कजरवेटर ऑफ फारेस्ट, वन विभाग, उत्तर प्रदेश।
11. डा. नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान विभाग, लखनऊ।
12. डा. अनूप कुमार दीक्षित, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र), लखनऊ (ऑनलाइन)।